कंक्रीट

19 अक्टूबर 2019

शुभारंभ सदा की भाँति एक स्वीकारोक्ति से होता है: हम नहीं जानते। हम नहीं जानते कि क्या करेंगे, पर सातवाँ महाद्वीप हमारे भीतर है, हमारे रक्त में, हमारे मस्तिष्क में। कंक्रीट-सभा कार्यक्रम का चौथा पड़ाव है और इस बार वस्तु स्वयं नगर के समान भारी है। नगरीय-रूपान्तरण, नगर-आन्दोलन, साझा-करण के अभ्यास, एस्बेस्टस और देह में उसके निशान, नगर-पारिस्थितिकी — कंक्रीट के चारों ओर घूमती हर वस्तु हमें इस्तानबुल के भीतर खींच लेती है।

पर पहले एक चलचित्र दिखाया जाता है: "1457 — ।" मंगल और बृहस्पति के बीच क्षुद्रग्रह-पट्टी में 1457 क्रमांक का एक क्षुद्रग्रह है और उसका नाम अंकारा है — एक जर्मन खगोल-भौतिकविद ने अंकारा से अपने प्रेक्षण किए थे, इसीलिए यह नाम दिया। वृत्तचित्र अंकारा के विनाश को एक गधे की जीवनी के माध्यम से कहता है। साठ मिनट की फ़िल्म से पन्द्रह मिनट का अंश — पीले दानवों की मृत्यु, विनाश के विरुद्ध संगठन।

फिर एक अकादमिक मञ्च पर आते हैं और उनकी कथा फ़्रांस से आरंभ होती है। आँरी पेज़ेरा, विषविज्ञानी, 1974 में पेरिस के उपनगर के विश्वविद्यालय में काम कर रहे हैं। उनकी प्रयोगशाला में किए जा रहे प्रयोग सतत ग़लत परिणाम दे रहे हैं — कोई परीक्षण नहीं ठहरता। कारण है छत से झड़ते एस्बेस्टस के तन्तु; नई इमारत की सुन्दर दीवारों के नीचे एक विष बह रहा है। पेज़ेरा अपनी खोज को अकेला नहीं छोड़ते: विश्वविद्यालय के संघों के बीच एक अभियान में बदलते हैं। उसी अवधि में कारख़ाने में फ़्रांसीसी सेना के लिए एस्बेस्टस-पट्टी बनाने वाली स्त्री-श्रमिकें कारख़ाने पर अधिकार करती हैं — हमारा कारख़ाना नहीं छोड़ेंगे, अपनी नौकरियाँ नहीं छोड़ेंगे। की मण्डली स्त्री-श्रमिकों के पास जाकर कहती है "हाँ, कारख़ाना और नौकरियाँ महत्त्वपूर्ण हैं, पर यह कारख़ाना तुम्हें मार रहा है।" दो आन्दोलन मिलते हैं: जानने वाली क्रिया से और क्रिया करने वाले ज्ञान से एक जन-आन्दोलन जन्म लेता है।

अकादमिक श्रमिक-स्वास्थ्य-कार्य-सुरक्षा परिषद से आती हैं। बात यह है कि समस्त पर्यावरण-आपदाएँ श्रमिक की देह पर जो निशान छोड़ती हैं, वही केन्द्र में हैं। पेज़ेरा के पुत्र की बनाई एक वृत्तचित्र है: "" — पहरेदार, चौकीदार, पर अधिकतर "किसी ध्वनि को सुनते रहना" के अर्थ में। जिसे निरन्तर ढका जाता है, जिसे न देखे जाने का प्रबंध किया जाता है, उसी सत्य को हठ से सुनते रहने का प्रयास। श्रमिक-स्वास्थ्य पर्यावरण-स्वास्थ्य का प्रथम दर्शक है — पहले निशान उसी देह पर पढ़े जाते हैं।

कथा तुर्की की ओर लौटती है और स्थान से ही जा चिपकती है। यह बिएनाले-कार्यक्रम वास्तव में में होने वाला था — हालिच के तट पर, औद्योगिक-विरासत के एक स्थान में। पर निर्माण-कार्य की प्रक्रिया में पुरानी इमारतों की एस्बेस्टस-सामग्री साफ़ नहीं की जा सकी। स्वतन्त्र रिपोर्टें ली गयीं, प्रक्रिया चली — एक ऐसी घटना में जहाँ लाखों लोग आते हैं, असाधारण रूप में अच्छी तरह चलने वाली सूचना-प्रक्रिया — और कार्यक्रम में स्थानान्तरित कर दिया गया।

> "हमारे यहाँ होने का कारण एस्बेस्टस है।"

एस्बेस्टस केवल औद्योगिक नहीं, तुर्की में प्राकृतिक रूप से भी निकलता है। कैपाडोकिया के भूवैज्ञानिक इतिहास से आया , प्राकृतिक एस्बेस्टस है। इज़्ज़ेत्तीन बारिश और कुछ शोधकर्ताओं ने वर्षों इस विषय पर काम किया है। पर औद्योगिक एस्बेस्टस एक अलग कथा है। दलिोवासी का कारख़ाना 1967 में स्थापित हुआ, 2007 में फ़्रांस की सबसे बड़ी पुरानी एस्बेस्टस-कम्पनी - को सौंपा गया। दो एकड़ की भूमि पर अपना समस्त अपशिष्ट डालता है; आसपास के एस्बेस्टस-मलबे से उसका मिलना एक अविश्वसनीय विषाक्त वातावरण रचता है — कारख़ाना यहाँ है, अपशिष्ट यहाँ है, लोग भी यहीं हैं। बोज़ुयुक में की चीनी-मिट्टी की इकाइयों में हज़ारों श्रमिक काम करते हैं और सिलिकोसिस की दरें भयानक हैं। श्रमिक अपनी रोटी और अपनी जान के बीच चुनाव करने को विवश हैं। उनके सिर पर एक पीला सङ्घ बैठा है, शून्य व्यावसायिक-रोग दर्ज होते हैं — किसी की मृत्यु नहीं होती, आधिकारिक अभिलेख के अनुसार। एस्बेस्टस एक खनिज के रूप में मिट्टी के नीचे, एक उद्योग के रूप में श्रमिक के फेफड़े में, एक छिपाव के रूप में राज्य के अभिलेखों में जीता है। कला-कार्यक्रमों को वित्त-पोषित करने वाली कम्पनियाँ और श्रमिकों को बीमार करने वाली कम्पनियाँ एक ही हैं; सार्वजनिक वित्त-पोषण नहीं मिलने के कारण इन प्रायोजनों पर निर्भर रहना पड़ता है।

-

, - — - , , – : -, – - , — , , , , -

, -, — , - - - — , , , ,

: , , - , — , -

"एक उत्तर-प्रलयकालीन वातावरण है। प्रलय-दृश्य जैसा कुछ, इस्तानबुल के भीतर ही।"

— यूनानी में बड़ा कुत्ता। नगर के पालित गली-कुत्ते पीले ट्रकों के पीछे स्वयं को नष्ट कर फेंका हुआ पाते हैं। एक शोधकर्ता वर्षों तक एक-एक कुत्ता गिनकर एक अभिलेख रचते रहे। पर हाल में नगरपालिका ने टैगिंग ही छोड़ दी है — इस प्रकार कोई संख्या ही नहीं रहती, कर्ता निर्धारित नहीं हो पाता। कभी तीन-पाँच कुत्ते, कभी दर्जनों-सैकड़ों कुत्ते। पीले ट्रक एस्बेस्टस-मलबा भी ढोते हैं और कुत्ते भी — मलबा और जीव एक ही ट्रक में, एक ही दिशा में, नगर जो नहीं देखना चाहता उन सब को उत्तर की ओर। कंक्रीट का प्रश्न इस प्रकार तंत्र के कर्ताओं, शक्तिशाली लोगों, सत्ताधारियों को कूड़े से, मलबे से, हानि से, कैसे हानियाँ देते हैं उसकी ओर देखने का अवसर देता है।

- — :

"विनाश सदा था। बन्दर से पहले भी। उनके लिए विनाश है, हमारे लिए जीवन।"

पौधे। मलबे के क्षेत्रों के प्रथम निवासी, किसी वनस्पति-उद्यान, ग्रीनहाउस, उद्यान या गमले के भीतर नहीं — धूसर पत्थर की दरारों में, कूड़े में, खण्डहर में, पुल के नीचे, जली भूमि पर, हाईवे के किनारे, निर्माण-गड्ढों में, नगर की समस्त रिक्तियों में जीने वाली प्रजातियाँ। घास ने मनुष्य की भाषा सीख ली है। पहले बसे क़स्बों में, जहाँ युद्ध पहली बार भड़का वहाँ, पहले वही उगे। बीजों में रिसे, खेतों पर अधिकार किया, पक्षियों के पेटों में, कुत्तों की लार में, गाड़ियों के टायरों में महाद्वीप से महाद्वीप पार किए।

, , , ; , -, , — : , ; , -

- : " , , " - , , , -, - , , -, — , ,

— :

"मनुष्य परजीवी है। पौधे की भाँति वह भोजन नहीं रच सकता। पौधे को काटे, तोड़े, मारे और खाए बिना वह जीवित नहीं रह सकता।"

पर मनुष्य उसी समय पौधों का सबसे अच्छा साझेदार भी है। वन साफ़ करता है, कूड़ा-स्थल रचता है, मार्ग खोलता है, नहर खोदता है — विनाश जहाँ हो वहाँ घास उगती है। पौधा भावुक बनाकर रखी जाने वाली वस्तु नहीं, विनाश के साथ जीने वाला, विनाश से पोषित होने वाला, विनाश को जीवन में बदलने वाला कर्ता है।

मञ्च पर एक कलाकार सीमेण्ट, और जल से केक बना रहे हैं। से अधिक स्वादिष्ट बनता है, वे कहते हैं। बचपन में गाँव में बेकरी नहीं थी — केक एक विलासिता थी, मापित वस्तु, वर्गीय चिह्न। अब उसी विलासिता की सामग्री से, कंक्रीट की सामग्री से केक की संगति पाने का प्रयास कर रहे हैं — थोड़ा जल मिलाते हैं, चलाते हैं, "मैं निपुण नहीं हूँ, पहली बार सीमेण्ट से केक बना रहा हूँ" कहते हैं। प्रदर्शन वर्गीय रूपान्तरण का मूर्त रूपक है; अनाड़ीपन कार्य का अंश है।

: - , - - -

"धीरे-धीरे सम्पूर्ण अतीत कंक्रीट में दफ़न हो गया।"

; , , - , , " , " — , : , , , — ,

- - - — , - ,

"गेज़ी सार्वजनिक स्थल पर किया गया एक हस्तक्षेप था। वहाँ हमने एक नगर में जीवन को फिर से रचा। सबके मन में दूसरी दुनिया की सम्भावना उतरी।"

- : , , , - , , — , , —

प्रश्न-उत्तर का दौर अप्रत्याशित गहराई पाता है। पिछले सप्ताह की आलू-सभा में कार्स से आयी एक किसान थीं — पनीर, कृषि, मृदा से जुड़ाव — और सभागार में आशा की एक भावना उठी थी, इस विश्वास के साथ कि कुछ चीज़ें छूकर बदली जा सकती हैं। पर जब हम नगर के पास आते हैं, मृदा से कटकर, पौधों की भावुकता-विरोधी भाषा से दूर होकर भीतर ही सिमटते जाते हैं। कोई नगर और ग्रामीण के बीच के झूठे विभाजन पर प्रश्न उठाता है: हम ग्रामीण को आदर्श बनाते हैं, दूर एक गाँव की कल्पना करते हैं — पर दोनों को बदलने वाले पूँजी-समूह एक ही हैं। यहाँ तीसरा हवाई-अड्डा बना रहा है तो वहाँ -बाँध बना रहा है। कर्ता एक ही, उपकरण एक ही, शक्ति एक ही। ऊपर से 2004 में पारित महानगर-क़ानून से इस्तानबुल का आधिकारिक रूप से ग्रामीण क्षेत्र ही नहीं रहा। तैंतीस महानगरों का कोई ग्रामीण क्षेत्र नहीं — सभी गाँव मोहल्ले बन गए। हम किस ग्रामीण की बात कर रहे हैं?

- : - , , - — ,

इस अंधकार में कोई मृत्यु को जीवन से मिलाती एक कथा सुनाता है: पाँच-छह वर्ष की अपनी बेटी को मृत्यु को "हम केंचुआ बनेंगे, फूल बनेंगे, कीट बनेंगे" कहकर समझाते हैं। बच्चे इसी आयु में जान-समझकर प्रश्न पूछते हैं और मृत्यु जीवन के माध्यम से समझायी जाती है। रोज़मर्रा के जीवन में अपनी बेटी को जो कहा जाता है, उसका संघर्ष में भी प्रतिबिम्ब आना चाहिए — विजय प्राप्त किए बिना, सही ठहराए बिना, प्रक्रिया को बुनते हुए आगे बढ़ना। अन्त तक सोचें तो वैसे भी सब कुछ ढह जाता है — पर प्रक्रिया स्वयं एक बुद्धिमत्ता वहन करती है। यहाँ से साथ मिलकर से नीचे उतर सकते हैं, कोई कहता है — स्थान स्वयं एक विडम्बना है, औद्योगिक-विरासत के विलासी उपभोग में बदलने के ठीक मध्य में हम खड़े हैं।

यदि कोई पुनर्चक्रण-श्रमिक बोले तो वह कहेगा "पुनर्चक्रण ने हमें बर्बाद कर दिया" — क्योंकि उसके मन में भी पुनर्चक्रण वही नगरपालिका के विज्ञापनों का स्वच्छ शब्द है। पर जिसे अपशिष्ट कहा जा रहा है, उसका मूल्य है; जिन संकल्पनाओं को पारिस्थितिकी कहा जा रहा है, उन्हें बाज़ार अपने में सोख लेता है। बर्लिन में नगरीय रूपान्तरण: बन्द हो रही हैं, उनके स्थान पर इकोमार्केट आ रहे हैं — एक ही उत्पाद दो-तीन गुना दाम पर बिक रहा है। एक समय "नगरीय पुनर्चक्रण" कहा जाता था, बहुत सुखद शब्द था — क्योंकि हर वस्तु को पुष्पित कर देने वाला कथन है। पारिस्थितिक आख्यान नया पूँजी-उपकरण है। रोमा-बोस्तानी कुछ कर सकते हैं पर एक सम्पूर्ण क्षेत्र भी इन्हीं संकल्पनाओं को ख़रीदकर कुछ और बेच देगा।

: - - , , — ,

कंक्रीट-सभा से लोग सभागार छोड़ते हुए हाथ में कुछ ले जाते हैं: एस्बेस्टस की अदृश्य हिंसा, क्रेन की छाया में कुत्तों की बेबसी, मलबे से जन्मा पौधों का घोषणा-पत्र, कंक्रीट से बने केक का कड़वा गाढ़ापन और एक बोस्तान की हठीली हरीतिमा। नगर की ओर देखते हुए हम आलू और जल की सभाओं के आशामय स्वर से दूर हट जाते हैं — पर के पौधे ठीक इसी हटाव के भीतर एक जीवन-नमूना सुझाते हैं: विनाश जहाँ हो, वहाँ उगना।